मनुष्य पृथ्वी पर ईश्वर की सबसे अनूठी कृति है और उसने अपनी उपस्थिति को अनेक माधुर्य और लालित्य के रूप में संगीत, कला, संस्कृति और सभ्यता के माध्यम से सार्थक दर्पण के रूप में स्थापित किया है। संगीत, कला और सभ्यता संस्कृति का एक ऐसा सा दृश्य प्रतिबिम्ब है, जिसकी छटा व्यक्ति के व्यवहार और भावों में झलकती है। संगीत और सभ्यता का उद्भव इस धरा पर अनन्त काल से है, जिसके माध्यम से अनेक नूतन क्षेत्रों का उत्थान हुआ है, जो सभ्य और आदर्श समाज की आधारशिला है।

भारतीय संगीत और सभ्यता का स्वरूप क्रियात्मक एवं मोहक प्रवृति का है जो सभी को आनन्दमयी वात्सल्य और शालीनता से आकर्षित करता है। इन दोनों का आपसी सान्निध्य भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठित रूप प्रदान करता है। मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत विद्यमान है। संगीत, संचार और सम्प्रेषण का एक महत्वपूर्ण साधन भी है जो आगन्तुकों के लिए एक आदर्श मार्ग प्रशस्त करता है।

वर्तमान समय में आज जनमानस को भारतीय संगीत और सभ्यता के प्रति आकृष्ट करना इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है। इस पुस्तक में अनेक ऐसे अनुभवी विद्वानों और प्रेरक व्यक्तित्व के विचारों का संग्रह है, जो समाज में संगीत और संस्कृति के प्रति सकारात्मक और सृजनात्मक स्वरूप को स्थापित करने में कुशल योगदान प्रदान करेंगे।

₹795
ISBN 978-93-86695-32-1
आर्यन पब्लिकेशन
110, गली नं. 4, हरफूल विहार,
बापरौला, नई दिल्ली-110043
फोन : 9891896483
ईमेल: aryanpublication12@gmail.com

भारतीय संगीत एवं संस्कृति

सम्पादक
डॉ. गीता शर्मा 'पाठक'
डॉ. चन्द्रपाल पूनिया

भारतीय संगीत एवं संस्कृति

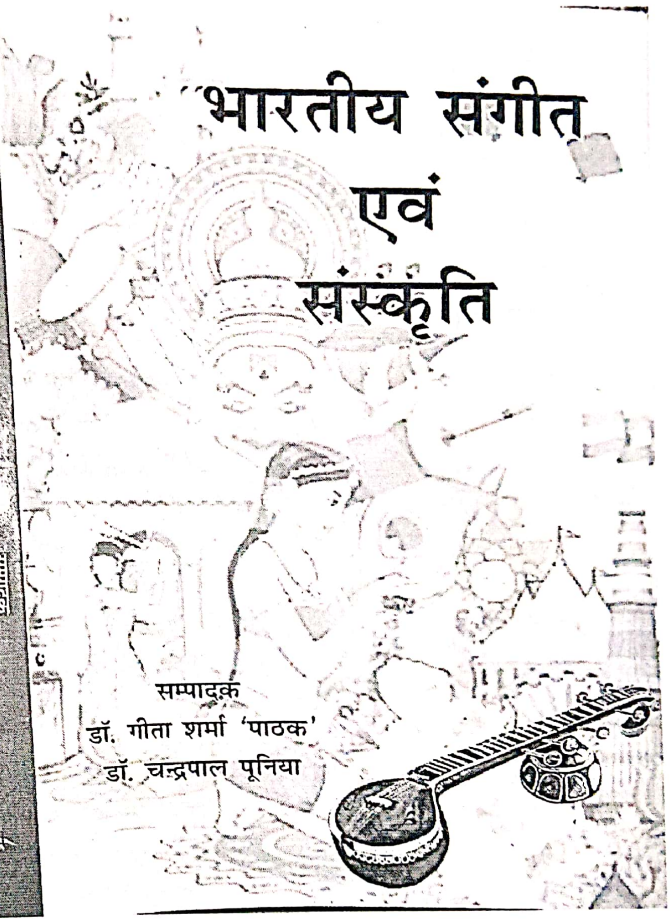

सम्पादक
डॉ. गीता शर्मा 'पाठक'
डॉ. चन्द्रपाल पूनिया

भारतीय संगीत एवं संस्कृति

© लेखक

प्रथम संस्करणः 2021

₹ 795

आई.एस.बी.एन. 978-93-86695-32-1

इस पुस्तक के सभी अधिकार लेखक के पास सुरक्षित है। अतः कोई भी व्यक्ति अथवा कंपनी इस पुस्तक को एवं इसके किसी भी भाग को इसके मूल रूप में अथवा रूपांतरित रूप में इलैक्ट्रॉनिक, प्रकाशन एवं किसी अन्य क्षेत्र के लिए लेखक से लिखित अनुमति लिए बिना उपयोग करने की चेष्टा न करे।

प्रकाशक : आर्यन पब्लिकेशन
110, गली नं. 4, हरफूल विहार,
बापरौला, नई दिल्ली– 110043
दूरभाष– 09891896483
ई–मेलः– aryanpublication12@gmail.com

शब्द संयोजक : अंजिता ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली

भारत से मुद्रित

अनुक्रम

मूल्यांकन एवं परामर्श मण्डल 9

भूमिका 11

1. सांग में संगीत विधान 15
   – डॉ. पूर्णचन्द शर्मा
2. समय चक्र एवं रागों का विभाजन 33
   – डॉ. गौरी खन्ना
3. लोक संगीत का उद्भव एवं विकास 47
   – डॉ. पुष्पा रानी
4. हरियाणा की कला, संस्कृति एवं संगीत 55
   – डा. भारती
5. हरियाणवी लोकगीतों का बदलता स्वरूप 65
   – डॉ. मंदीप कौर
6. भारतीय लोकतंत्र में संचार माध्यम की भूमिका 74
   – डॉ. रीनू शर्मा
7. हिन्दी साहित्य और सिनेमा 81
   – डॉ. मीनाक्षी

Scanned with OKEN Scanner

5

हरियाणवी लोकगीतों का बदलता स्वरूप

डॉ. मंदीप कौर

कला संस्कृति का अंग है और संस्कृति किसी भी देश अथवा प्रांत के विशिष्ट जन समुदाय की रुचि आचार–विचार, कला–कौशल और बौद्धिक स्तर आदि का प्रतिबिम्ब होती हैं। भारतीय सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में पर्वों, उत्सवों, दैनिक क्रिया कलापों, व्यवहारिक उद्देश्यों तथा कृषि आदि से सम्बन्धित अनेकानेक अवसरों पर संगीत एंव नृत्य का आयोजन करना एक सामान्य प्रथा है। इन अवसरों पर प्रांतीय वेश–भूषा तथा अनेकानेक सौन्दर्यात्मक परिवेश के निर्माण में अनेकानेक कलाओं का समन्वय स्वाभाविक रूप से हो जाता है। इसलिए कहा गया है कि कला जनमानस की धरोहर है। समाज के साथ कला की यह संलग्नता ही लोक कला शब्द को सार्थक करती है। लोक कलाओं में सरलता, सहजता, आडम्बरहीनता, स्वाभाविकता आदि होने के कारण एक अन्य ही प्रकार की गरिमा व पवित्रता समाई होती है। कलात्मक नियमों के बन्धन से परे हृदयगत भवनाओं की अभिव्यक्ति की दृष्टि से लोककलाएं एक उत्कृष्ट माध्यम सिद्ध होती हैं तथा व्यक्तिगत भावनाओं की अपेक्षा सामूहिक

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत (वादन), गुरू नानक महिला कॉलेज, यमुना नगर

Scanned with OKEN Scanner

भावनाओं का संचार करने में विशेष भूमिका निभाती हैं। यही लोककलाएं संगीत के रूप में नृत्य के रूप में, चित्रकला या वास्तुकला के रूप में उन भावनाओं, धारणाओं एवं विश्वासों आदि के साथ-साथ सम्पूर्ण परिवेश, रहन-सहन, तौर-तरीके, सोच विचार आदि को प्रतिबिम्बित करती है जो संस्कृति का दर्पण कहे गए हैं।

लोकसंगीत की उत्पत्ति के विषय में कोई प्राचीन शास्त्र उपलब्ध नही है। श्री सुरेन्द्र चन्द्र जी अपनी पुस्तक "हरियाणा का लोकसंगीत एवं उसका वर्तमान स्वरूप" में लिखते हैं कि "लोकसंगीत का उद्गम एवं विकास ऐतिहासिक मानव समाज के उद्गम के साथ ही हुआ है।[1] सर्वप्रथम "मतंगकृत बृहद्देशी" में लोकसंगीत का क्षेत्र प्रजा से लेकर राजा तक माना गया है। उन्होंने ही सर्वप्रथम लोकसंगीत को देशी संगीत के अन्तर्गत रखा।[2] डा. इन्द्राणी चक्रवर्ती के अनुसार, "देशी का अर्थ जनमनोरंजन तो है किन्तु कालान्तर में जब इसके सिद्धान्त बने तो वह केवल जनमनोरंजन न रहा, वरन रस की परिभाषा दिखाने की समर्थ पद्धति बन गया।[3]

हरियाणा उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध राज्य है। यह उत्तर भारत में हिमाचल, दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान और पंजाब, पूर्व में यमुना नदी इसे उत्तराखण्ड और उत्तरप्रदेश से अलग करती है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली तीन ओर से इससे घिरी हुई है।

हरियाणा शब्द की उत्पत्ति ही हरि के नाम से हुई है। हरियाणा शब्द हरि और अयण इन दो शब्दों के मेल से बना है। हरि का अर्थ है भगवान विष्णु और अयण का अर्थ है निवास। अतः हरियाणा शब्द का अर्थ हुआ भगवान विष्णु का निवास स्थान। कोई हर अर्थात् भगवान शंकर से इसका सम्बन्ध जोडता है। हरियाणा का एक अर्थ हरिआरण्यक अर्थात् हरि का वन भी लिया जाता है। वैदिक युग में यह देवभूमि ऋषियों का तपस्थल रही है। कितने ही शास्त्र ग्रन्थ एवं पुराण इसी देवभूमि में प्रणीत हुए।

हरियाणा की लोक कलाओं में लोकसंगीत, लोकनृत्य एंव लोकगीतों का विशेष महत्व है क्योंकि इन लोक कलाओं के प्रति हरियाणा के

सामाजिक वर्ग का विशेष आकर्षण रहता है। विभिन्न पर्वो, त्योहारों, उत्सवों, मांगलिक कार्यो एंव समारोहों पर गायन, वादन व नृत्य आयोजन यहां सामान्य है। हरियाणा प्रदेश में लोकगीतों, लोकनृत्यों, लोककथाओं एंव सांगों आदि में इस प्रदेश का जनजीवन पूर्णतः साकार हो उठता है।

लोकगीत लोक के गीत होते हैं, जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है। सामान्य लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एंव लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जाता है। लोकगीत ग्रामीण समाज का प्रतिबिम्ब कहलाते हैं। लोकसंगीत की उत्पत्ति मानव के इन्हीं मनोभावों एवं प्रेरणाओं को व्यक्त करने की प्रवृत्ति के कारण हुई है। रेणु कुमारी के अनुसार, "धीरे-धीरे सामूहिक एवं सामाजिक जीवन का विकास होने पर खुशी के अवसर पर व ऋतु पर्वो आदि के समय लोगो ने गाँवों और जंगलों में एक जगह सम्मिलित होकर नाच-गाकर, सींग, शंख, बांसुरी आदि बजाकर अपनी कलात्मक अभिरूचि को व्यंजित किया गाँवों में गाए जाने वाले यही लय प्रधान गीत किसी जनसमाज में परम्परागत रूप से प्रचलित रहे और कालान्तर में लोकगीत कहलाने लगे।"[4] जो धुनें ग्रामीण समाज में प्रचलित होती हैं, वे समयानुसार लोकधुनों के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं और उन्हें लोकगीतों की संज्ञा दी जाती है। इसलिए शास्त्रीय नियमों की परवाह न करते हुए सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्धवाणी सहज उद्धत करता है, वही लोकगीत है। अतः लोकगीत शब्द का अर्थ है :-

1. लोक प्रचलित गीत
2. लोक रचित गीत
3. लोक विषयक गीत

लोकगीतों के अन्तर्गत संस्कार गीत, पर्व गीत, लोकगाथा या गाथा गीत, पेशा गीत तथा जातीय गीत आते हैं। हरियाणा में ग्रामीण महिलाओं व पुरूषों द्वारा विशिष्ट अवसरों पर या विवाह आदि के अवसर पर परम्परागत गीत गाना और सामाजिक जीवन में अध्यात्मिकता एंव

Scanned with OKEN Scanner

सात्विकता के साथ-साथ उल्लास, उमंग, माधुर्य एंव सौन्दर्य से परिपूर्ण वातावरण का निर्माण करना जीवन का एक सहज अंग है। लोकगायकों की मण्डलियाँ अनेक पारिवारिक या सामाजिक अवसरों पर धमाल, फाग या विवाह गीत आदि को गाकर आनन्दमय वातावरण निर्मित करती है जैसे होली के गीत :-

उड़े हो गुलाल रोली हो रसिया।।

या

जब साजण ही परदेस गये मस्ताना सावण क्यूँ आया।।

इसी तरह विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत भी हरियाणा में अब तक बहुत प्रचलित रहे हैं। जैसे :-

बीरा भात भरण ने आया री।।

या

हमने बुलाए सुथरे सुथरे भूंडे भूंडे आए री।।

धार्मिक गीत भी हरियाणा में काफी प्रचलित रहे हैं जैसे :-

राम अर लछमण दसरथ के बेटे दोनों बण खण्ड जां एजी कोए राम मिले भगवान।

इक बण चालै दो वण चालै तीजे मैं लग आई प्यास एजी कोए राम मिले भगवान।

ना अड़े लोटा ना अड़े गागर ना अड़े सरवर ताल एजी कोए राम मिले भगवान।

सीताजी के बाग मां ते उड्डी ए बदरिया बरसण लाग राम एजी कोए राम मिले भगवान।

किसान फसल पकने की अवस्था में, जब फसल कटने में थोड़ा समय शेष होता है, तब वे लोकगीत गाकर नृत्य करते हुए अपना समय व्यतीत करते हैं। पुत्र जन्म के समय गाए जाने वाले एक बहुत ही सुन्दर लोकगीत का उदाहरण देखिये-

छज्जो पे बैठे राजा दशरथ बहुत दुखी है जी। रानी कहा न गया की री बात संतान म्हारे ना है जी।।

आच्छे पंडत बुलाओ, हां बेग बुलाओ जी। पंडत करम तो बांच रांणाओ संतान म्हारे ना है जी।।

कागद हो तो मैं बाँच्या, हाँ बाँच सुणाऊ जी। राजा करम तो बाँच्या ना जाय, संतान थारै होगी जी।।

आच्छे आच्छे माली अर बेग बुलाओ जी। माली ल्याओ जगल की बूटी, कौसल्या के ताँही जी।

सुमित्रा के ताँही जी, केकई के ताँही जी। कहाँ ते ल्याओ सिलैया अर कहाँ ते लुढ़िया जी।।

पहाड़ा ते ल्याओ सिलैया अर वहीं ते लुढ़िया जी। ठठेरे ते आला-प्याला बजाज के तै स्वापी जी।।

पहला तै प्याला कौसल्या अर दूजा सुमित्रा जी। राजा तीजा तै प्याला केकई, तीनों गरभ तै जी।।

ये नौ दस मास हुए हैं कौसल्या ने जाए राम समित्रा ने लिछमण ए जी केकई ने भरत - चरत ये चारु भाई जी।।

जो ब्याही इस नै गावै, अर जच्चा तै सुणावै अर बोत रिझावै जी। उसके कटैं जनम के पाप बहुत सुख पावै जी।।

उपरोक्त लोक गीत पुत्र जन्म पर गाया जाता है।

हरियाणा में त्योहारों के अवसर पर गीत गाने की परम्परा बहुत पुरानी है। सामण के गीत, तीज के गीत कातक मास के गीत, दशहरे दीपावली के अवसर पर गाए जाने वाले गीत, सांझी के गीत आदि। तीज के अवसर पर गाए जाने एक गीत देखिए :

आया तीजा का त्योहार आज मेरा बीरा आवेगा।

थम पींग पाटड़ी ठा ल्यो अर रल कै सारी गा ल्यो।

है थम गा ल्यो राग मल्हार आज मेरा बीरा आवेगा।।

हरियाणा में दशहरे से पहले राम कथा का मंचन हर गाँव, हर शहर में किया जाता है, जिसे रामलीला कहा जाता है। हरियाणा में सभी नर नारी, बच्चे बूढे राम लीला का आनन्द लेते रहे हैं। सीता के स्वयंवर के समय किस प्रकार श्रीराम अपने गुरु से आशीष लेकर अपने अँगूठे की दाव से ही शिव धनुष तोड़कर स्वयंवर जीत जाते हैं इस प्रसंग पर एक प्रसिद्ध हरियाणवी लोकगीत इस प्रकार है :

सीता का सुअम्बर रच रह्या है, उड़े राज्जा जुड़े हजार।
वो रावण घणा घमण्डी है, वो ल्याया फौज चढ़ाए। वा फौज चुगरदे नै फिरग्यी है, उह्तै टूट्या ना धनस वाण।
वो लिछमन झट – पट उठया है, उसकी सै उमर नादान। वो रामचन्दर जी उठ्ये है, लिए गुरू चरण चुचकार।
गूट्ठे की दाव लगी थी है, उह्के हो गए टुकड़े च्यार। राजा जनक ने मारी किलकारी है यो किस राणी का लाल।
राजा दसरथ फूल्या हाण्डै है, यो सै कौसल्या का लाल। सीता जयमाला ल्याई है, उह्के संग की सहेली साथ।
थाली मै चमकता दीवा है, उड़ै हो रह्यी जय – जयकार।।

इसी प्रकार हरियाणा में खेती बाड़ी के गीत, चक्की पीसण के गीत, रहन–सहन के गीत, पारिवारिक व सामाजिक बहुत तरह के लोकगीतों का प्रचलन पुराने समय से चलता आ रहा है।

परन्तु वर्तमान समय में सामूहिक गायन और नृत्य की यह प्रथा लुप्त होती जा रही है। महिलाओं व पुरूषों द्वारा विशिष्ट अवसरों पर या विवाह आदि के अवसर पर परम्परागत गीत गाने का स्थान अब लचर और अश्लील गानों ने ले लिया है। आजकल विवाह या उत्सवों के अवसर पर यदि लोक गायकों को बुलाया जाता है तो वे भी मौलिक लोकगीतों की बजाए अभद्र और अश्लील भाषा से युक्त गीत ही गाते है और साथ ही अश्लील नृत्य भी परोसा जाता है। लोकगीतों की मौलिक धुनों को भुला चुके लोक गायक फिल्मी प्रभाव में फिल्मी धुनों में ही लोकगीतों को गा रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित अधिकतर

श्रोता भी अब इन्हीं लचर और अश्लील गीतों को सुनाना अधिक पसन्द करते हैं। हरियाणवी रागिनी के आजकल जो आयोजन करवाए जाते हैं वहाँ महिला दर्शक अथवा श्रोता तो शायद ही दिखाई दें परन्तु स्टेज पर अश्लील अंग संचालन करती महिला अवश्य मिल जाएगी। ऐसे आयोजनों में तो दर्शकों का नृत्य भी देखने योग्य होता है। ऐसे आयोजनों को सांगीतिक आयोजन कहना भी अनुचित प्रतीत होता है।

लोकगीतों की पदावलियाँ यदि यहाँ के जीवन के सुख – दुःख, हर्ष – विशाद तथा आशा – निराशा आदि भावनाओं को उद्दीप्त करती है तो वाद्य इन गीतों व नृत्यों को सजीवता प्रदान करते हैं। यहाँ नृत्यों व गीतों के साथ ढोलक व सांग संगीत के साथ नगाड़े का अधिक महत्व है। परन्तु यहाँ भी पाश्चात्य और फिल्म संस्कृति ने अपना प्रभाव छोड़ा है। वर्तमान काल में प्रदेश के कलाकार अपनी परम्परा से डगमगा रहें हैं। आधुनिकता के जोश में ये लोग अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। लोकगीतों में ये लोकगायक पाश्चात्य वाद्यों तथा फिल्मी धुनों का प्रयोग करने लगे हैं।

भाषा लोकगीतों का प्रमुख अंग है क्योंकि स्वरलयपूर्ण सामूहिक गीतों की अभिव्यक्ति में भाषा ही पारिवारिक व सामाजिक जीवन का भावनात्मक चित्रण करती है। सरल और सहज स्वरात्मक एवं लयात्मक प्रयोगों से सुसज्जित लोक भाषा ही लोक गीतों के लिए ग्रहण करने योग्य है। लोकगीतों की रचनाएँ सरल, सुमधुर और आडम्बरहीन होती हैं। कलिष्ठ एवं कठोर शब्दों का इनमें अभाव रहता है। सामान्य रूप से लोकगीतों के प्रसंगों के अन्तर्गत दैनिक कार्यो का उत्साहपूर्ण एवं मनोरंजक वर्णन, वार्षिक पर्व तथा उत्सवों का वर्णन, वीर योद्धाओं की प्रशंसा, देवी – देवताओं की महिमा, देशप्रेम व मानव जाति का पारस्परिक स्नेह, अत्याचार का विरोध आदि विषय सम्मिलित रहते हैं। मानव जीवन के सम्पूर्ण संस्कारों को भी इनमें सम्मिलित किया जाता है। लोकगीत दैनिक जन जीवन की झाँकियों से ओत–प्रोत रहते हैं। ऋतुओं ने युगों से जन मानस की भावनाओं को आन्दोलित किया है। लोकगीतों में ऋतु गीतों की रचना इस बात के सक्षम उदाहरण हैं। सावन के गीत, वैसाख में फसलों

Scanned with OKEN Scanner

का उल्लास न जाने कितना अधिक भण्डार इन ऋतुओं ने लोकगीतों
दिया है। परन्तु आजकल ये ऋतु गीत केवल युवा उत्सवों तक ही
रह गए हैं या कुछ बुजुर्गों के मुँह से ही इन्हें सुना जा सकता है। आज
के नौजवानों का इन लोक गीतों से कोई वास्ता नहीं है। आज का
गीतों का रचयिता भी श्रोताओं की माँग के अनुसार ऐसे गीतों की
कर रहा है जिनमें कोमल भावनाओं, सरलता, सहजता के लिए
स्थान नही है।

प्राचीन परम्पराओं एंव रूढ़िवादिता के प्रति आग्रही रहने
मान्यताओं ने हरियाणा की संस्कृति को सींचा भी है और विकसित
के लिए मार्ग प्रशस्त भी किया है। यहाँ की वेशभूषा, व्यवसाय, आर्थिक
स्थिति तथा राजनैतिक परिवर्तनों ने यहाँ की संस्कृति को परिपक्व किया
है। परन्तु जैसे–जैसे प्रदेश प्रगति की और अग्रसर हुआ, वैसे–वैसे प्रदेश
के साधारण जनमानस के साथ लोक कलाकारों ने भी अपनी संस्कृति को
भुला पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया। इसका एक सशक्त उदाहरण है
हरियाणवी पॉप। हरियाणवी पॉप भी पंजाबी पॉप गीतों की तरह पूरी
दुनिया में लोकप्रिय हो रहे हैं। स्थिति यह है कि प्रदेश ही नहीं, अन्य
राज्यों में भी शादियों के अवसर पर इन्हें बजाया जाता है।हरियाणवी पॉप
को आज आधुनिक संगीत उपकरणों के साथ गाया जाता है तथा इसकी
प्रस्तुति में भी आधुनिक परिधानों का प्रयोग किया जाता है।

मौजूदा समय में हरियाणवी रागणियों का स्वरूप भी बदलता जा
रहा है। पहले मनोरंजन के साधन कम हाने के कारण लोग सांग देखने
दूर–दूर जाया करते थे। आजकल यदि सांग का आयोजन किया भी
जाता है तो वहाँ भी मौलिक धुनों की जगह फिल्मी धुनों ने अपना डेरा
जमा लिया है। हरियाणवी गीत, रागणियाँ और सांग तो अब केवल
विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और विद्यालयों में आयोजित होने वाले युवा
उत्सवों की शान मात्र बनकर रह गए हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अपनी लोक संस्कृति, लोक
संगीत की धरोहर को बचाने के लिए हरियाणा के मौलिक लोकवाद्यों को

पाश्चात्य प्रभाव से बचाए रखना, लोकधुनों को संरक्षित करना लोक
गायन की मौलिक परम्परा को बनाए रखना और सबसे अधिक अपनी
लोक संस्कृति की विरासत को सम्भालना अत्यन्त आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुरेन्द्र चन्द्र, हरियाणा का लोकसंगीत और उसका बदलता स्वरूप, पृष्ठ संख्या–7
2. रेणु कुमारी, हरियाणा का लोकसंगीत एवं उसका शास्त्रीय संगीत से पारस्परिक सम्बन्ध, पृष्ठ संख्या–16
3. डा. इन्द्राणी चक्रवर्ती, स्वर तथा रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, पृष्ठ संख्या–61
4. रेणु कुमारी, हरियाणा का लोकसंगीत एवं उसका शास्त्रीय संगीत से पारस्परिक सम्बन्ध, पृष्ठ संख्या–9

Scanned with OKEN Scanner